विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2020

विश्व के बहाइयों को

परमप्रिय मित्रों,

दो उभरती हुई सच्चाइयों ने हमें आपको इन शब्दों से संबोधित करने के लिए प्रेरित किया है। पहली सच्चाई है कोरोना वायरस महामारी द्वारा संवाहित चुनौतीपूर्ण एवं भयावह खतरों के बारे में दुनिया भर में बढ़ती हुई जागरूकता। अनेक देशों में, इस आपदा की रोकथाम के लिए साहस एवं दृढ़संकल्प भरे सामूहिक प्रयासों के बावजूद, स्थिति पहले ही गंभीर हो चुकी है और परिवारों एवं व्यक्तियों के लिए दुखों की रचना करती हुई सभी समाजों को संकट में डुबोए जा रही है। एक के बाद एक, कई जगहों से दुख और कष्ट की लहरें उमड़ती चली आ रही हैं जो विभिन्न समयों में, विभिन्न तरीकों से, विभिन्न राष्ट्रों को जर्जर बनाकर रख देंगी।

दूसरी सच्चाई -- जो कि दिन-प्रतिदिन ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट होती जा रही है -- वह है एक ऐसे चुनौती भरे समय में, जिसके समान हमारे जीते जी हमारी स्मृति में शायद ही कभी सामने आया था, बहाई विश्व की लोचपूर्णता और उसकी अथक शक्ति। आपका प्रत्युत्तर अद्भुत रहा है। एक महीने पहले जब हमने नौरुज के समय आपको पत्र लिखा था तो हम उन प्रभावपूर्ण विशेषताओं को रेखांकित करने के लिए उत्सुक थे जिनकी झलक उन समुदायों द्वारा दिखाई जा रही थी जिनके कार्यकलापों का सामान्य ताना-बाना ध्वस्त हो चुका था। बीच के सप्ताहों में, जबकि अनेक मित्रों को नित सख्त से सख्त प्रतिबंधों का अनुपालन करना पड़ा, जो कुछ भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ है उससे हमारी प्रशंसा की भावना और अधिक गहरी हुई है। दुनिया के अन्य हिस्सों में प्राप्त किए गए अनुभवों से सबक सीखते हुए, कुछ समुदायों ने अपने-अपने जनसंख्या क्षेत्रों के दायरे में लोक स्वास्थ्य से जुड़ी आवश्यक बातों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के सुरक्षित एवं रचनात्मक तरीके खोजे हैं। उन लोगों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जो वायरस और उसके संक्रमण से उत्पन्न आर्थिक मुसीबत से सबसे ज्यादा जोखिम में हैं। इस सिलसिले में बहाई वर्ल्ड न्यूज सर्विस पर जिन प्रयासों की झलक दिखाई गई है वे इसी तरह से जारी अन्य अनगिनत प्रयासों के चंद उदाहरण मात्र हैं। इन उपक्रमों के साथ-साथ, इस समय जिन आध्यात्मिक गुणों की नितान्त आवश्यकता है उन्हें परखने, प्रोत्साहित करने और उनके विकास के लिए भी अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। अनिवार्यतया, ऐसे अनेक प्रयास अकेले में या परिवार की इकाई में किए जा रहे हैं, लेकिन जहां भी स्थितियां अनुकूल हैं अथवा संचार के साधनों के कारण ऐसा करना संभव है, वहां इन समान परिस्थितियों को भोग रहे व्यक्तियों के बीच सक्रियता के साथ

असाधारण एकता की भावना का संचार किया जा रहा है। सामूहिक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण, सामुदायिक जीवन की गत्यात्मकता को दबाया नहीं जा सकेगा।

यह देखकर हमारी चेतना उड़ान भरती है कि 'प्रकाश की सेना' के इन अदम्य सेनानायकों, हमारी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं, ने कितनी सक्षमता के साथ अपने समुदायों को मार्गदर्शन और इस संकट के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को दिशाबोध दिया है। इस कार्य में उन्हें सलाहकारों और उनके सहायकों से सुदृढ़ सहायता प्राप्त हुई है जिन्होंने सदा की तरह प्रेमपूर्ण सेवा की ध्वजा को वीरतापूर्वक ऊंचा उठाए रखा है। अपने-अपने देशों में अक्सर तेजी से बदलते हुए हालातों की अच्छी तरह जानकारी रखते हुए, आध्यात्मिक सभाओं ने प्रभुधर्म के मामलों के प्रशासन के लिए, और जहां भी संभव हो सका है वहां खास तौर पर चुनावों के संचालन के लिए, आवश्यक प्रबंध किए हैं। नियमित संवादों के माध्यम से संस्थाओं और एजेन्सियों ने विवेकपूर्ण परामर्श प्रस्तुत किए हैं, दिलासा भरे आश्वासन और सतत प्रोत्साहन दिए हैं। कई मामलों में, उन्होंने भी अपने समाजों में प्रचलित परिसंवादों से उभरते हुए रचनात्मक विषयों की पहचान शुरु की है। अपने नौरूज संदेश में हमने जो आशा की थी कि मानवजाति की सहनशीलता की यह परीक्षा उसे ज्यादा गहन अंतर्दृष्टि से सम्पन्न बनाएगी, वह अब साकार रूप लेने लगी है। अग्रणी लोग, प्रमुख विचारक और व्याख्याकार अब उन बुनियादी संकल्पनाओं और मुखर अभिलाषाओं की टोह लेने लगे हैं जो हाल के दिनों में लोगों के परिसंवाद से बिल्कुल गायब थीं। फिलहाल, ये तो बस कुछ शुरुआती झिलमिलाहटें हैं, किंतु फिर भी उनमें यह संभावना निहित है कि सामूहिक जागृति का एक दौर सामने आएगा।

बहाई जगत द्वारा क्रियात्मक रूप से झलकाई गई लोचपूर्णता को देखकर हमें जो तसल्ली मिल रही है उसके साथ ही मानवजाति के लिए इस महामारी के परिणामों से हम व्यथित हैं। अफसोस, हम जानते हैं कि बहाई धर्मानुयायी और उनसे जुड़े लोग भी इस कष्ट के साझेदार हैं। लोगों के स्वास्थ्य की आवश्यकताओं के मद्देनजर आज दुनिया के अनेक लोग अपने दोस्तों और सगे-सम्बंधियों से जो दूरी और अलगाव बनाए हुए हैं, वह, कुछ लोगों के लिए, सदा-सदा के लिए अलगाव बनकर रह जाएगा। हर सुबह यह बात पक्की लगती है कि सूर्य ढलने से पहले न जाने और कितनी यातनाएं झेलनी होंगी। अनन्त लोकों में पुनर्मिलन का वादा उन लोगों को सांत्वना प्रदान करे जो अपने प्रियजनों को खो देते हैं। हम उनके हृदय की सांत्वना के लिए प्रार्थना करते हैं और याचना करते हैं कि परमात्मा की करुणा उन सबको आच्छादित करे जिनकी शिक्षा, आजीविका, घर-बार, और यहां तक कि उनके जीवित रहने के मूल साधन ही आज खतरे में पड़ गए हैं। आपके लिए, आपके प्रियजनों, और आपके समस्त देशवासियों के लिए, हम बहाउल्लाह से विनम्र प्रार्थना करते हैं और उनके आशीर्वादों और उनकी कृपाओं के लिए विनती करते हैं।

वह पथ जिसपर हमें चलना है वह चाहे कितना ही लम्बा और कठिन क्यों न हो, हमें इस यात्रा को पूरा करने में आपके पौरुष और दृढ़संकल्प पर परम विश्वास है। दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों से ज्यादा महत्व देते हुए, वंचित लोगों को आध्यात्मिक पोषण प्रदान करते हुए, जो लोग उत्तर के लिए सतत प्यासे हैं उन्हें संतुष्टि देते हुए, और जिनके मन में विश्व को बेहतर बनाने के लिए कार्य करने की ललक है उन्हें उसके साधन उपलब्ध कराते हुए, आप आशा, निष्ठा और उदारता के भंडार से प्रेरणा ग्रहण करें। 'आशीर्वादित पूर्णता' के समर्पित अनुयायियों से हम इससे कम की आशा कैसे कर सकते हैं ?

विश्व न्याय मन्दिर